PEER *Reviewed & Refereed* **JOURNAL**

ISSUE-25 VOLUME-3 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 जुलाई–सितंबर, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

3

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

अनुक्रमणिका

01.कृष्णा सोबती की रचनाओं के विविध आयाम–[1]राकेश प्रधान, [2]डॉ.रेशमा अंसारी 6

02.रीतिकालीन कवि देव के काव्य की विशेषता–डॉ.अरुणा, ... 9

03.हिंदी की आरम्भिक कहानियाँ–नागेन्द्र प्रसाद सिंह पटेल 11

04.युगबोध एव प्रगतिशीलता : केदारनाथ सिह–डॉ0प्रतिमा सिंह 15

05.आधुनिक पूर्व हिन्दी साहित्य में वृद्ध दशा का वर्णन–नीता जाधव 19

06."कालापानी संज्ञा मुझको खलती है" काव्य संग्रह में समसामयिक संदर्भ"–डॉ. रत्ना कुशवाह 21

07.प्रसंग : ओड़िआ आत्मकथा–डॉ.शिशिर बेहेरा 24

8.साहित्य के वर्तमान लेखक और पाठक–डॉ. अनिल कुमार सिंह 26

9.आधुनिक स्त्री : 'संघर्ष से सक्षम तक'–प्रा.डॉ.शैलजा जायसवाल 29

10.मुकुट बिहारी 'सरोज' के काव्य में अलंकार योजना–डॉ.राहुल श्रीवास्तव 32

11.प्रेमचंद की स्त्री दृष्टि–डॉ.सुषमा देवी 34

12.आयुर्वेद में वर्णित योनिव्यापद् व्याधि : गर्भिणी के विशेष आलोक में–खुशबू कुमारी 36

13.आधुनिकता की अवधारणा और हिन्दी साहित्य–सुरेन्द्र कुमार पटेल 39

14.रेणु की हास्य–व्यंग्य रचनाएँ–डॉ.सिन्धु सुमन 43

15.ज्योतिराव फुले एवम् गोविन्द रानाडे का सामाजिक चिंतन की प्रासंगिकता–भैरुचंद 46

16.महाभारत–शान्तिपर्व का वैशिष्ट्य–दिव्या शिवानी 48

17.आधुनिक समय में परिवार के बदलते स्वरूप : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण–अंजली कुमारी 50

18.दूसरा सप्तक की भूमिका: एक विश्लेषण–डॉ.संगीता वर्मा 52

19.सम्पोषणीय विकास के सन्दर्भ में वैश्विक राजनीति और भारत –सन्तोष कुमार 54

20.सर्वेश्वर : सघन–गहन संवेदना का कवि–डॉ0 ऋचा सुकुमार 57

21.निराला के काव्य में सामाजिक यथार्थ (विधवा, तोडती पत्थर, दान के संदर्भ में)–डॉ.काळे मदन भाऊराव, बीड 60

22.भूमण्डलीकरण की हिन्दी कविता में सामाजिक चिंतन–रोहित कुमार सिंह कुशवाहा 62

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

जिनमें परंपरागत मान्यताओं के प्रति अस्वीकार का बोध सामाजिक संरचनाओं के निषेध मात्र की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि सामाजिक स्थितियों को पलटकर देखने और उनके भीतर के सत्य को उद्घाटित करने की कोशिश है। यह स्त्री आकांक्षा का वह सच है जो संस्कृति और नैतिकता के ढोंग में सदा अदृश्य रखा गया। कृष्णा जी का लेखकीय स्वभाव उन्हें साहित्यकारों की उस अलग पंक्ति में स्थापित करता है जिन्होंने जीवन में आसान समझौतों की राह कभी नहीं अपनाई।12

इस प्रकार हम देखते हैं कि कृष्णा जी की रचनाओं में हमें विविध आयाम जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराते हैं। उनके उपन्यास और कहानी से लेकर निबंध व समय–समय पर प्रसारित एवं प्रकाशित हुए साक्षात्कार में राष्ट्रीय विचारधारा, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक चेतना के स्वर मुखर हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ–1.थानवी, ओम, संस्मरण, प्रतिरोध की आवाज, हंस, अक्षरा प्रकाशन प्रा. लि., पूर्णांक–390, वर्ष, 33, अंक–9, अप्रैल2019,पृष्ठ–21. 2.राय, सारा, आकलन, डार से बिछुड़ी : पुराने वक्तों का आख्यान, हंस, अक्षरा प्रकाशन प्रा. लि., पूर्णांक–390, वर्ष, 33, अंक–9, अप्रैल 2019, पृष्ठ–33. 3.सोबती, कृष्णा, ज़िन्दगीनामा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2009, नई दिल्ली, पृष्ठ–87.4.सोबती, कृष्णा, मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पहली आवृत्ति 2009, नई दिल्ली, पृष्ठ–45. 5.सोबती, कृष्णा, ज़िन्दगीनामा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., बारहवां संस्करण, 2020, नई दिल्ली, पुस्तक की भूमिका से 6.सोबती, कृष्णा, ज़िन्दगीनामा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., बारहवां संस्करण, 2020, नई दिल्ली, पृष्ठ–26–27 7. सोबती, कृष्णा, ज़िन्दगीनामा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., बारहवां संस्करण, 2020, नई दिल्ली, पृष्ठ–34 8.सोबती, कृष्णा, डार से बिछुड़ी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पहली आवृत्ति 2008, नई दिल्ली, उपन्यास की भूमिका से. 9.सोबती, कृष्णा, बादलों के घेरे, एक दिन, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, चौथा संस्करण, 2017, पृष्ठ–140. 10.वाजपेयी, अशोक, कृष्णा सोबती रू जिनका समूचा साहित्य साधारणता की महिमा का इतिहास है, 18 फरवरी 2020,atyagrah.scroll.in/article/125084/tribute-to-litterateur-krishna-sobti-kabhi-kabhar-ashok-vajpeyi 11.प्रकाश, पल्लवी, बदलता सामाजिक परिवेश और कृष्णा सोबती, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, 2019, पुस्तक की भूमिका से 12.सेठी, रेखा, लेखन और नारीवाद, समालोचना,20सितंबर,2019, samalochan.blogspot.com/2019/09/blog-post_20.html

02.रीतिकालीन कवि देव के काव्य की विशेषता

–डॉ.अरुणा,
विभाग अध्यक्षा,
एल. वी. डी. महाविद्यालय,रायचूर, कर्नाटक राज्य,

हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में शृगांर रस विशेश आश्रय प्राप्त हुआ है। उस युग के प्रायः सभी कवियों ने तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों से उत्प्रेरित होकर शृगांरिक परम्परा को विकासोन्मुख करने में योग दिया है। इन कवियों में महाकवि देव का स्थान सर्वोपरि है। देव ने यद्यपि दोनों ही कवियों ने सांसारिक जीवन में परकीया प्रेम की पूर्णा रूप में भर्त्सना की है।

"जोगह तें कदिन संयोग पर नारी को"

परन्तु फिर काव्य के क्षेत्र में परकीया के प्रेम में जो आतुरता, आत्म त्याग, आत्म बलिदान और निस्वार्थ प्रेम की भावना मिलती है वह स्वकीया से नहीं पायी जाती।यही कारण है भिक्तकालीन साहित्य कृशणा काव्य में भी परकीया प्रेम को इतना अधिक महत्व दिया गया है।

संयोग और वियोग श्रृंगार दोनों ही पक्षों का अनूठा चित्रण देव की काव्य में मिलता है। संयोग शृगांर रूप चित्रण और अनुभव विधान को ही विशेश स्थान प्रास हैं। रूप चित्रण में उन्होंने नायिका की सर्वांग रूपश्री का सुन्दर तथा प्रभावोत्पादक वर्णान किया है। यथा –

"माखनु सो तनु दूध सो जीवनु है दधि ते अधिको उर ईठी।
जा छबि आगे छपाकर छाँछ समेत सुधा वसुधा सब सीठी ।।
नैननि नेह चुवै कहि देव बुझावत बैन वियोग आगीठी।
ऐसी रसीली अहीरी कहो क्यों न लगे मन मोहनै मीठी।।"

छेव मूलतः शृंगार भावना के कवि थे। दो–एक ग्रन्थों को छोड़कर सम्पूर्ण काव्य सागर शृंगार की मधुर–रस की धाराओं से प्रवाहित होती है। इन्होंने प्रेम की महिमा का गान किया है। इस रस को पीकर मनुश्य मर कर भी अमर हो जाता है, पागल होकर भी जगत् के रहस्यों को जान लेता है। इस प्रकार संयोग और वियोग शृंगार की दोनों अवस्थाओं का सुन्दर और विस्तृत विवेचन किया है। उनकी उद्भावनाएँ, कहीं–कहीं अत्यन्त मौलिक है–

'मधु की मक्खियाँ अँखियाँ भई मेरी, 'गोरी–गोरी मुख आज ओरो सो बिलानो जात' की उक्ति अत्यन्त सुन्दर और कलापूर्ण तथा मार्मिक बद पड़ी है। शृंगार के कुछ चित्र उपमानों

द्वारा भी चित्रित किए गए है। देव ने रूप सौन्दर्य के भी मुग्धकारी चित्र खींचे हैं। कहीं–कहीं रूप और उपभोग की वासना और उसमें प्रेम का रंग अत्यन्त प्रगाढ़ हो गया है–

'' देव में सीस बसायो सनेह के भाल मृगम्यद बिन्दु के भाख्यो ।
कंचुकी में चुपरो करि चोवा लगाइ लियो, उर सों अभिलाख्यो ।।
सांवरे लाल को साँवरो रूप में नैननि में कजरा करि राख्यो ।।''

इस प्रकार यह स्पश्ट है कि देव संयोग शृंगार के वर्णन में पूर्णतः सफल है। परन्तु वियोग शृंगार के वर्णन में इनके हृदय की वृत्ति अधिक प्रवृत्त दिखाई देती है। वास्तव में दोनों पक्षों की प्रेम–परीक्षा भी यहीं होती है। प्रेम–स्वर्ग विरह की अग्नि में तपकर निर्मल हो जाता है। विरहिणाी नायिका प्रिय के विरह में अत्यन्त कुश हो गई है, यहाँ तक कि अब उसकी मरणोन्मुख अवस्था जान पड़ती है। देव ने इसका चित्र भी कितनी सुन्दर व्यंजना से चित्रित किया है–

'' साँसन ही सों समीर गयो, अरु आँसुन ही सब नीर गयो ढरि
'तेजु गयो गुन लै अपनो, अरु भूमि गई तनु की तनुता करि ।।
दिन में मुख फेर हँसी, हरि हियो जुलियो हरि जु हरि ।।''

इस प्रकार देव शृंगार की दृष्टि से रीतिकालीन कवियों सबसे अधिक बढ़े हुए हैं। रीतिकाल में किसी कवि ने शुंगार का ऐसा रमसिक्त वर्णन नहीं किया है। गम्भीरता, तन्मयता, व्यंग आदि के योग से इनका शृंगारिक पक्ष अत्यन्त स्तुत्य है।

वैराग्य :

शृंगार रस में अपाद–चूड़ मग्न यह कवि वैराग्य की भी गहरी भावना से ओत–प्रोत था। मनोविज्ञान की दृष्टि से विराग कोई स्वतन्त्र भाव न होकर राग का रूपान्तर ही है। राग अपनी तीव्रता से थककर वैराग्य में परिणत हो जाता है। सांसारिक मनुश्य साधारणतः अतिशय राग से थककर ही तत्वान्वेशणा अथवा परमात्म–चिन्तन करता है। अस्तु, देव का वैराग्य मूलतः अतिशय राग की प्रतिक्रिया है। उनका राग–क्लान्ति, आत्म–भर्त्सना और पराजय से युक्त वैराग्य में परिणत हो गया है। राग की यह थकान देव की वैराग्य कविता में अत्यन्त स्पश्ट है –

'' हाय कहा कहों चंचल यामन की गति में मति मेरी भुलानी ।
हों समुझाय कियो रस–भोग न 'देव' तऊ तिसना बिनसानी ।।
दाड़िम दाख रसाल–सिता मधु ऊख पिये ओ पियूश से पानी ।
पै न तऊ तरुरी–तिय के अधरान के पीबे की प्यास बुझानी ।।''

आचार्यतव :

देव कवि और आचार्य दो रूपों में हमारे सामने आते हैं। संस्कृत साहित्य में आचात्र्यव और कवित्व दो भिन्न मानव–प्राणियों में मिलते हैं परंतु रीतिकाल इसका अपवाद है। आचार्यत्व की दृष्टि से देव उस रीतिकालीन साहित्य के सर्वश्रेश्ठ और सफल आचार्य हैं, जिसमें आचार्य कवियों ने काव्य का सागोपाग विवेचन किया है। शब्द–रसायन और भाव–विलास इनके प्रमुख रीति ग्रन्थ हैं।

रीति काव्य की समीक्षा करने से ज्ञात होता है कि विवेचन विशय और विवेचन–शैली की दृष्टि से आचार्यों के तीन पृथक् वर्ग हैं–मम्मट तथा विश्वनाथ आदि की शैली पर विवेचन करने वाले आचार्य। शृंगार–तिलक और रसमंजरी आदि के अनुसार शृंगार–रस और उसके आलम्बन नायिका का दर्शन कराने वाले आचार्य तथा कुवलयानन्द आदि के अनुसार अलंकार मात्र का विवेचन करने वाले आचार्य। इनमें देव प्रथम श्रेणी के अन्तर्गत हैं। रीतिकाल में आचार्यत्व की दृष्टि से देव अन्य कवियों की अपेक्षा बहुत बढ़े–चढ़े हैं। इनके मुकाबले में खड़े होने में केशव ही समर्थ हैं। रीतिकाल के प्रवर्तक होने के कारण केशव का कार्य अधिक स्तुत्य है। केशव में पांडित्य है परंतु देव में स्पश्टता, गम्भीर एवं सूक्ष्म–रस–चेतना है जो आलोचक अथवा आचार्य का एक मूलवर्ती गुण है। कवि रूप में देव का हृदय–पक्ष केशव की अपेक्षा अधिक समृद्ध है। उनमें आयेग, तन्मयता, रसाद्रता केशव से अधिक है। कला–पक्ष भी देव का केशव से अधिक सम्पन्न है छन्दों में अधिक मसृणता अथवा संगीत है। गीतितत्व समृद्ध और प्रचुर है। इस कारण देव कवियों की द्वितीय श्रेणी के अन्तर्गत हैं हिन्दी में सूरसागर, कामायनी और रामचरितमानस के सृश्टा प्रथम श्रेणी के अन्तर्गत हैं।

IIJIF GENERAL IMPACT FACTOR

iiJS

Scientific Journal Impact Factor
TOGETHER WE REACH THE GOAL

ISSN
INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INTERNATIONAL CENTRE

Official Correspondence Address:- Dr. Sunil Jadhav, Infront of Hunaman Gad kaman,
Maharana Pratap Housing Society, Nanded - 431605, Maharashtra.
Email - shodhrityu78@yahoo.com

WhatsApp 9405384672

ISSN 2454-6283
9 772454 628000